पाठः पंचदशः

सुभाषितानि

उ़द्यमेंन हि सिद्धयन्ति कार्याणि न मनोरथैः।

न हि सुप्तस्य सिहस्य, प्रविशन्ति मुखे मृगाः।।11।।

शब्दार्थ :– उद्यमेन :– उठ कर काम करने से ; सिद्धयन्ति :–होते हैं; कार्याणि :– काम ; मनोरथैः :– केवल कामना करने से नहीं ।सुप्तस्य :–– सोये हुए ;सिंहस्य :– शेर के ;प्रविशन्ति :–चले जाते ;मुखे :– मुख में ; मृगाः– हिरण;

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ संस्कृत पुस्तक –8 में से पाठ पंचदश सुभाषितानि में से ली गईं है। इस में कवि ने कहा है कि उठ कर काम करने से ही सब काम होते है, केवल कामना करने से नहीं ।

सरलार्थः– कवि कहता है कि उद्यम करने से ही सब काम हातें हैं केवल कामना करने से नहीं ।सोए हुए शेर के मुख में हिरण अपने आप प्रवेश नहीं करते ।

विद्या विवादाय धनं मदाय शक्ति परेषां पर पीडनाय ।

खलस्य साधो विपरीतम् एतद् ज्ञानाय दानाय च रक्षनाय।।12।।

शब्दार्थः– खलस्य :– दुष्ट की विद्या :– पढाई विवादाय :– झगडे के लिए मदाय :– अहंकार के लिए पर :दूसरों को पीडनाय :– दुःखी करने के लिए साधो :– सज्जन की विपरीतम्:– उलट ज्ञानाय :– ज्ञान देने के लिए दानाय :– दान देने के लिए रक्षायः– रक्षा करने के लिए

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ संस्कृत पुस्तक –8 में से पाठ पंचदश सुभाषितानि में से ली गई है। इस में दुष्ट एवं साधु के स्वभाव के बारे में बताया गया है।

सरलार्थ :– दुष्ट की विद्या झगडे के लिए धन अहंकार के लिए एवं शक्ति दूसरों को पीडित करने के लिए होती हैं इसके विपरीत साधु की विद्या दूसरों को ज्ञान देने के लिए एवं धन दूसरों को मदद करने के लिए एवं शक्ति दूसरों की रक्षा करने के लिए होती है।

माता शत्रु पिता वैरी येन बालो न पाठितः ।

न शोभते सभा मध्ये हंस मध्ये बको यथा ।।13।।

शब्दार्थ :– वैरी :– दुश्मन ; येन :–जिस का ; पाठितः:– पढा ; शोभते :– शोभा पाता ;:बको :– बगुला ;

प्रसंग :–प्रस्तुत पंक्तियॉ संस्कृत पुस्तक –8 में से पाठ पंचदश सुभाषितानि में से ली गईं हैं। इसमें कवि ने पढ़ाई के महत्व के बारे में बताया है।

सरलार्थ :– कवि कहता है कि माता उस बच्चे की शत्रु है और पिता वैरी है ,जिस ने अपने बच्चे को नहीं पढ़ाया ।क्योंकि वह सभा में वैसे ही शोभा नहीं पाता जैसे हंसों के बीच में बगुला ।

प्रिय वाक्य प्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः

तस्मात तदेव वक्तव्यम् वचने का दारिद्रता।।14।।

शब्दार्थः– प्रदानेन :– बोलने से सर्वेः– सब तुष्यन्ति :– संतुष्ट जन्तवः:– प्राणि ; तस्मात :– इस लिए वक्तव्यम् :– कहा गया है वचने :– बोलने में दारिद्रता :– कंजूसी कैसी

प्रसुंग :–प्रस्तुत पंक्तियॉ संस्कृत पुस्तक आठ में से पाठ पंचदश सुभाषितानि में से ली गईं हैं। इसमें कवि ने मीठा बोलने के बारे में बताया है।

सरलार्थ :'– कवि कहता है कि मीठा वचन बोलने से सब प्राणि संतुष्ट हो जाते हैं इसलिए कहा गया है बालनें में कंजूसी कैसी ?

दुर्लभं संस्कृत वाक्यं , दुर्लभः क्षेमदः सुतः

दुर्लभा विमला बुद्धि दुर्लभःस्वजनःप्रियं।।15।।

शब्दार्थः– दुर्लभः :– कठिन क्षेमदः :– कल्याणकारी विमला :– निर्मल स्वजनः :– अपना व्यक्ति प्रिय :– प्यारा ।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ संस्कृत पुस्तक –8 में से पाठ पंचदश सुभाषितानि में ये लीं गई हैं। इस में कवि ने बताया है कि संस्कृत का वाक्य मिलना कठिन है कल्याणकारी पुत्र मिलना कठिन है, निर्मल वुद्धि मिलना कठिन है ,अपना जन प्यारा मिलना कठिन है ।

सरलार्थः– कवि कहता है कि संस्कृत का वाक्य मिलना कठिन है, कल्याणकारी पुत्र का मिलना कठिन है अपना जन प्यारा मिलना कठिन है।

परोक्षे कार्य हन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिने

वर्जयेत् तादृशं मित्रं विष कुम्भं पयो मुखम्।।16।।

शब्दार्थः– परोक्षे :–पीठ पीछे कार्यहन्तारः– काम को बिगाड़ने वाला प्रत्यक्षे :– सामने प्रियवादिने :– मीठा बोलने वाला ;वर्जयेत :– छोड़ देना चाहिए तादृश :–ऐसे मित्र को विष कुम्भं :– जहर का घडा ;पयो :– दुध ;मुखं :– मुख पर।

प्रसंग :– यह लाईनें संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई है ।यह सुभाषितानि पाठ पंचदश में से ली गई है । इस में बुरे मित्र के गुण अवगुण के बारे में बताया गया है।

सरलार्थ :– कवि कहता है कि जो वयक्ति पीठ पीछे काम को बिगाडने वाला हो और सामने मीठा बोलने वाला हो ऐसे मित्र को छोड़ देना चाहिए क्योंकि वह ऐसे घडे के समान होता है जो विष से भरा हुआ है लेकिन दिखावे के तौर पर जिस के मुॅह पर दुध लगा हुआ है।

यस्मिन देशे न सम्मानं न वृति न च बान्धवाः।

न च विद्यागमः कश्चित ,तं देशं परिवर्जयेत्।।16।।

शब्दार्थः– यस्मिन :– जिस ;वृति :– आजीविका का साधन ;विद्यागम :– विद्या प्राप्ति का साधन ;तं :–उस परिवर्जयेत :– छोड़ देना चाहिए ।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ संस्कृत पुस्तक –8 में से लीं गई है ।यह सुभषितानि पाठ पंचदश में से ली गईं हैं। इस में कवि ने बताया है कि जिस देश में कुछ भी जीवन जीने योग्य तथ्यों की प्राप्ति न हो वहॉ रहना नहीं चाहिए ।

सरलार्थ :– कवि कहता है कि जिस देश में न सम्मान है न जीविका प्राप्ति का कोई साधन है न कोई बन्धु बान्धव है और न विद्या प्राप्ति का कोई साधन है उस देश को छोड़ देना चाहिए।

दुर्जन परिहर्तव्यः विद्याऽलंकृतोऽपि सन्।

मणिना भूषित सर्पः किमसौ न भयंकरः।।18।।

शब्दार्थः–दुर्जन :– दुष्ट व्यक्ति ; परिहर्तव्य :– छोड़ देना चाहिए ; अलंकृतो अपि :– विद्या से अलंकृत होने पर भी ;

मणिना :– मणियों से विभूषित होने पर भी ; किमसौ :– क्या ;

प्रसंगः– प्रस्तुत पंक्तियॉं संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गईं हैं । यह सुभाषितानि पाठ में से लीं गईं है।इसमें कवि ने दुष्ट को वर्जनीय बताया है

सरलार्थः–विद्वान विद्या से सुशोभित दुष्ट वयक्ति को छोड़ देना चाहिए।क्योंकि मणि से सुशोभित सॉप क्या भयंकर नहीं होता अर्थात मिणि वाला सॉप कभी भी डस सकता है ठीक उसी प्रकार विद्या से सुशोभित लेकिन भीतर से दुष्ट व्यक्ति हानि ही करता है।